Roll No. ..... Total No. of Sections : 4

Total No. of Printed Pages : 8

Code No. : B03/309

III Semester Examination

M.A.

हिन्दी साहित्य

Paper III

[आधुनिक काव्य भाग-I]

Time : Three Hours] [Maximum Marks : 80

[Minimum Passing Marks : 16

नोट : प्रत्येक इकाई में प्रत्येक प्रश्न का भाग 'अ' एवं 'ब' अति लघु उत्तरीय प्रश्न हैं, जिनके उत्तर एक या दो वाक्यों में दें। प्रत्येक इकाई के भाग 'स' (लघु उत्तरीय प्रश्न) का उत्तर 200-250 शब्दों में दें। भाग 'द' (दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) के उत्तर 400-450 शब्दों में दें।

इकाई–I

1. (अ) मैथिलीशरण गुप्त की पाँच रचनाओं के नाम बताइए। **2**

(ब) 'साकेत' में कुल कितने सर्ग हैं ? उर्मिला का विरह वर्णन 'साकेत' के कौन-से सर्ग में है ? **2**

P. T. O.

(स) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए— **6**

शिशिर न फिर गिरि वन में,

जितना माँगे पतझड़ दूंगी, मैं इस निज नन्दन में।

कितना कम्पन तुझे चाहिए, ले मेरे इस तन में।

सखि कह री, पाण्डुरवा का क्या अभाव आनन में?

वीर जमा दे नयन नीर यदि तू मानस भाजन में,

तो मोती सा मैं अकिंचन, रक्खूँ उसको मन में,

हँसी गई, रो भी न सकूँ मैं, अपने इस जीवन में,

तो उत्कण्ठा है, देखूँ फिर क्या हो भाव भुवन में।

अथवा

उस रुदन्ती विरहिणी के रुदन-रस के लेप से,

और पाकर साथ उसके प्रिय विरह-विक्षेप से,

वर्ण-वर्ण सदैव जिनके हों विभूषण कर्ण के,

क्यों न बनते कविजनों के ताम्र पत्र सुवर्ण के?

(द) 'साकेत' के नवम् सर्ग की कथावस्तु की विशेषताएँ तथा काव्यगत शिल्प पर प्रकाश डालिए। **10**

(स) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए— **6**

पथ को न मलिन करता आना,

पद-चिन्ह न दे जाता जाना,

सुधि मेरे आगम की जग में

सुख की सिहवन हो अन्त खिली!

विस्तृत नभ का कोई कोना,

मेरा न कभी अपना होना,

परिचय इतना इतिहास यही

उमड़ी कल थी मिट आज चली।

अथवा

दूसरी होगी कहानी,

शून्य में जिसके मिटे स्वर,

धूलि में खोयी निशानी

आज सिर पर प्रलय विस्मत,

मैं लगाती चल रही नित,

मोतियों की हाट औ,

चिनगारियों का एक मेला।

(द) "करुणा का सागर महादेवी के काव्य में लहराता है" इस कथन को स्पष्ट कीजिए। **10**

अथवा

महादेवी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय देते हुए साहित्य में उनका स्थान निर्धारित कीजिए।

अथवा

मैथिलीशरण गुप्त को 'युग प्रतिनिधि' कवि कहा जाता है—सतर्क उत्तर दीजिए।

इकाई–II

2. (अ) 'कामायनी' में मनु ने चिन्ता को 'हे अभाव की चपल बालिके' के रूप में क्यों सम्बोधित किया ? संक्षिप्त में समझाइए। **2**

(ब) श्री जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित उपन्यासों के नाम लिखिए। **2**

(स) निम्नलिखित पद्यांशों में से किसी एक की सप्रंसग व्याख्या कीजिए— **6**

आह! घिरेगी हृदय-लहलहे, खेतों पर करका घन-सी;

छिपी रहेगी अन्तरतम में, सबके तू निगूढ़ धन-सी।

विस्मृति आ, अवसाद घेर ले, नीरवते! बस चुप कर दे,

चेतनता चल जा, जड़ता से, आज शून्य मेरा भर दे।

अथवा

देखे मैंने वे शैल-शृंग।

जो अचल हिमानी है रंजित, उन्मुक्त उपेक्षा भरे तुंग

अपने जड़ गौरव, के प्रतीक वसुधा का कर अभिमान भंग।

अपनी समाधि में रहे सुखी, बह जाती है नदियाँ अबोध

कुछ स्वेद-बिन्दु उसके लेकर, वह स्विमित नयन गत शोक क्रोध

स्थिर-मुक्ति, प्रतिष्ठा मैं वैसी चाहता नहीं इस जीवन की,

मैं तो अबाध गति मरुत सदृश हूँ, चाह रहा अपने-अपने मन की

जो चूम चला जाता जग-जग प्रति पग में कम्पन्न की तरंग वह ज्वलनशील गतिमय पतंग।

(द) कवि जयशंकर प्रसाद का संक्षिप्त जीवन-परिचय देते हुए उनके काव्य सौष्ठव पर प्रकाश डालिए। **10**

अथवा

'कामायनी' में 'समरसता' के सिद्धान्त पर प्रकाश डालिए।

इकाई–III

3. (अ) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला को 'महाप्राण' क्यों कहा जाता है ? अत्यंत संक्षिप्त में उत्तर दीजिए। **2**

(ब) निराला की छायावादी रचनाओं के नाम लिखिए। **2**

(स) निम्नांकित की व्याख्या कीजिए– **6**

स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर-फिर संशय

रह-रह उठता जग जीवन में रावण जय-भय;

जो नहीं हुआ आज तक हृदय रिपु-दम्य-श्रान्त

एक भी, अयुत-लक्ष में रहा जो दुराक्रान्त,

कल लड़ने को हो रहा विकल वह बार-बार,

असमर्थ मानता मन उद्यत हो हार-हार।

अथवा

अशब्द अधरों का सुना भाव,

मैं कवि हूँ, पाया है प्रकाश

मैंने कुछ अहरह रह निर्भर

ज्योतिस्तरणा के चरणों पर।

जीवित-कविते, शत-शर-जर्जर

छोड़कर पिता को पृथ्वी पर

तू गई स्वर्ग, क्या यह विचार–

"जब पिता करेंगे मार्ग पर

यह, अक्षम अति, तब मैं सक्षम,

तारूँगी कर गह दुस्तर तम ?"

(द) "निराला रचित 'राम की शक्ति पूजा' में राम को स्वयं निराला का प्रतीक माना गया है।" इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। **10**

अथवा

"निराला द्वारा रचित 'सरोज-स्मृति' हिन्दी का सबसे लम्बा शोक गीत है।" इस उक्ति की पुष्टि कीजिए।

इकाई–IV

4. (अ) महादेवी वर्मा के काव्य की दो विशेषताएँ लिखिए। **2**

(ब) "मैं नीर भरी दु:ख की बदली" इस पंक्ति का अर्थ अत्यंत संक्षेप में समझाइए। **2**